रानी और चूहा

पुनर्कथन: सारा अलबी

रानी और चूहा

पुनर्कथन: सारा अलबी

एक समय की बात है कि दो राज्य एक-दूसरे के पड़ोस में थे. एक राज्य पर एक राजा और रानी शासन करते थे जो अपनी प्रजा को बहुत प्रिय थे. उस राज्य के लोग सुखी और संपन्न थे. दूसरे राज्य का राजा भयानक और क्रूर था और उस देश की प्रजा अपने राजा से भयभीत रहती थी.

एक अशुभ दिन भयानक राजा की सेना ने सुखी राज्य पर आक्रमण कर दिया. इस हमले के बाद सुखी देश सुखी न रहा. उस देश का प्रजा-प्रिय राजा लड़ाई में मारा गया. उसकी रानी और नन्ही बेटी को कैदी बना कर भयानक राजा की सेना अपने राज्य में ले आई और दोनों को महल की सबसे ऊँची मीनार के ऊपर स्थित एक छोटे से कमरे में बंद कर दिया.

कुछ समय पश्चात भयानक राजा ने एक परी को बुलाया और उसे साथ लेकर कैदियों की कमरे में आया. “क्या तुम मुझे आश्वासन दे सकती हो कि यह बच्ची बड़ी होकर मेरे बेटे के लिए एक सुंदर और योग्य पत्नी होगी?” उसने परी से पूछा.

परी ने घोषणा की, ऐसा ही होगा.

“तब मैं इन्हें जीवनदान देता हूँ,” राजा गुर्राया.

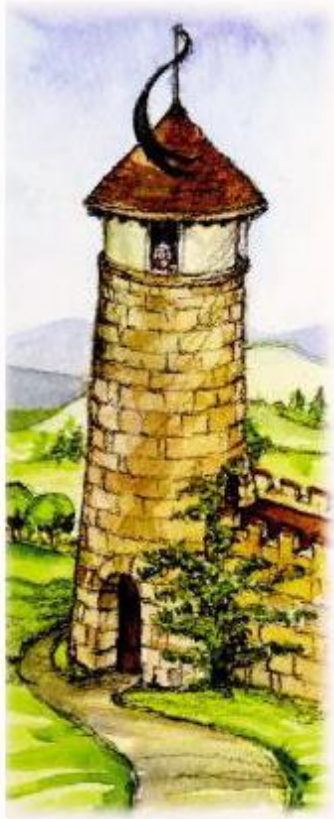

मीनार के अंदर कैद रानी उस चिंता से घुली जा रही थी कि बड़े होने पर राजकुमारी को यहाँ के राजकुमार के साथ विवाह करना पड़ेगा- राजकुमार भी अपने पिता के समान भयानक और क्रूर था. इस बीच रानी और उसकी बेटी को खाने के लिए हर दिन सिर्फ रोटी का एक टुकड़ा और मटर के तीन दाने दिए जाते थे. इस कारण दोनों दिन-प्रतिदिन कमज़ोर होते गए.

एक दिन संध्या के समय जब रानी मटर का एक दाना, जो उसने रात के खाने के लिए बचा कर रखा था, खाने लगी तो एक चूहा वहाँ आ गया. चूहे ने रानी के सामने इतना सुंदर नृत्य किया कि एक पल के लिए वह अपनी दुर्दशा भूल ही गई.

रानी को भूख तो लगी थी परन्तु उसने मुस्कराते हुए मटर का अंतिम दाना चूहे को दे दिया. फिर रानी ने ज़मीन पर सोती हुई अपनी बच्ची को देखा और एक आह भरी.

"अगर मेरे पास थोड़ी सी सूखी घास होती तो मैं उससे एक टोकरी बना लेती और उस टोकरी में अपनी प्रिय बेटी को लिटा कर मीनार से बाहर नीचे लटका कर धरती पर रख देती. शायद किसी दयालु व्यक्ति को मेरी बेटी मिल जाए और वह उसे अपने साथ इस भंयकर कैदखाने से दूर ले जाए."

चूहे ने रानी की बात समझ ली थी. वह वहाँ से चला गया और कुछ समय के बाद सूखी घास का ढेर लिए लौट आया. वह तब तक बाहर से घास लाता रहा जब तक कि रानी के पास इतनी घास नहीं हो गई कि वह टोकरी बुन सकती थी.

रात भर में ही रानी ने सूखी घास से एक टोकरी बना ली और अपनी प्यारी बेटी को उस में लिटा दिया. उसने टोकरी को मीनार से नीचे लटका दिया और किसी व्यक्ति के उस ओर आने की प्रतीक्षा करने लगी.

शीघ्र ही एक बूढ़ी औरत उधर आई. उसने पुकार कर रानी से कहा, “रानी साहिबा, मुझे आपकी परेशानी की जानकारी है. मैं आपकी मदद करूँगी. बदले में मुझे बस एक चीज़ चाहिए.”

“जो चाहो मांग लो!” रानी ने कहा.

“अगर आपके कमरे में कोई चूहे हैं तो मुझे बस एक चूहा दे दें. मेरी बिल्लियों को स्वादिष्ट चूहे बहुत पसंद हैं.”

उसकी बात सुन कर रानी चिल्ला पड़ी, “यहाँ पर बस एक चूहा है. लेकिन मैं उसके मारे जाने की बात सोच भी नहीं सकती.”

उसी पल वह बूढ़ी एक परी में परिवर्तित हो गई. यह वही परी थी जो भयानक राजा के साथ मीनार के अंदर आई थी. “मैं ही वह चूहा बन कर यहाँ आई थी जिसके साथ तुमने मित्रता की थी,” परी ने कहा. “हम धनी हैं पर हमारे सच्चे मित्र नहीं हैं. मैं देखना चाहती थी कि क्या तुम ईमानदार और दयालु हो और अपने व्यवहार से तुमने दिखला दिया है कि तुम सच में ऐसी हो.”

फिर परी ने अपनी जादू की छड़ी घुमाई. रानी और उसकी बेटी दूर एक कुटिया में पहुँच गए, जहाँ वह दोनों भयानक राजा के अत्याचारों से सुरक्षित थे.

कई वर्ष बीत गए. राजकुमारी बड़ी होकर एक लंबी, सुंदर और आकर्षक युवती बन गई. लेकिन किसानों का रूप धारण कर, भयानक राजा के महल से बहुत दूर एक झोंपड़ी में, माँ और बेटी प्रसन्नता से अपना जीवन बिता रही थीं.

एक दिन घोड़े पर सवार राजा का बेटा उधर आया और उनके कुयें से पानी पीने के लिए वहाँ रुका. राजकुमारी की सुंदरता देख कर वह मोहित हो गया. "यद्यपि कि तुम एक किसान की बेटी हो, लेकिन मैं तुम से ही विवाह करूँगा," लड़के ने कहा. "अभी मेरे साथ चलो."

राजकुमारी ने अप्रिय युवक को घूर कर देखा. "मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी," लड़की ने दृढ़ता के साथ कहा.

उसकी बात सुन, राजकुमार ने गुस्से से कहा, "अगर ऐसा है तो मैं अपने पिता से कह कर तुम्हें और तुम्हारी माँ को तब तक कालकोठरी में कैद करवा दूँगा जब तक तुम अपना विचार बदल नहीं लेती."

और इस तरह राजकुमारी और उसकी माँ फिर कैदी बन गईं. अपने कथन अनुसार राजकुमार ने दोनों को कालकोठरी में कैद करवा दिया था.

जिस समय रानी और राजकुमारी ठंडी और अँधेरी कालकोठरी में बंद थीं, परी फिर एक बार उनके सामने प्रकट हुई.

“तुम ने मुझ से सच्ची मित्रता निभाई,” परी ले कहा. “अब मैं तुम्हारे साथ मित्रता निभाऊँगी. चलो मेरे पीछे-पीछे आओ! हम यहाँ से भाग जायेंगे!”

जादुई शक्ति से कालकोठरी का दरवाज़ा खुल गया. रानी और राजकुमारी भाग कर वहाँ से बाहर आ गईं. परी उन्हें मैदानों और खेतों से दूर एक ऐसी शांत घाटी में ले आई जो एक बहुत तेज़ बहती

नदी के दूसरे किनारे पर स्थित थी. जब भयानक राजा और उसके राजकुमार को पता चला कि कैदी भाग रहे थे तो वह तुरंत अपने घोड़ों पर सवार होकर उनका पीछा करने लगे. पर जैसे ही उनके घोड़े उफनती नदी के निकट पहुँचे घोड़े एकदम रुक गये. फिर अचानक वह उछल पड़े और उन पर सवार भयानक राजा और राजकुमार नदी में गिर गये और उस दिन के बाद वह किसी को दिखाई न दिये.

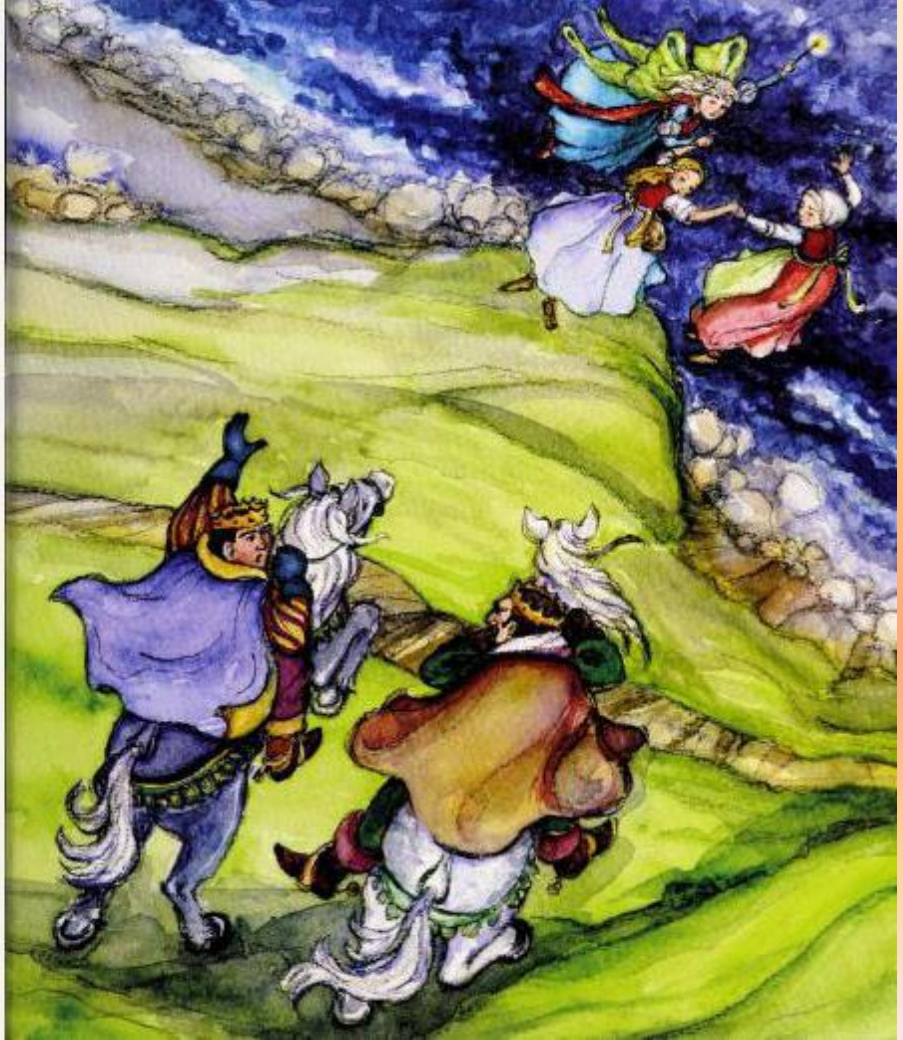

परी ने दोनों राज्यों की सारी प्रजा को एकत्र किया और सबने मिल कर अच्छी रानी और उसकी बेटी की वापसी का उत्सव मनाया. “हुर्रे!” लोगों ने प्रसन्नता से चिल्लाकर कहा. “लंबे समय तक हम दुखी रहे हैं. अब हमें विश्वास है कि रानी एक न्यायप्रिय शासक होंगी और हमारी देखभाल करने में राजकुमारी उनकी सहायता करेंगी! हुर्रे!”

अब दो की जगह एक विशाल राज्य था और हर कोई सुखी था.